- **रूस के विरुद्ध प्रतिबंधों में शामिल हैं**- रूस के केंद्रीय बैंक की परिसंपत्ति को फ्रीज करना; **अंतर्राष्ट्रीय स्विफ्ट भुगतान हस्तांतरण नेटवर्क** से प्रमुख रूसी बैंकों को अवरुद्ध करना; यूरोपीय संघ, ब्रिटेन, अमेरिका और कनाडा आदि के हवाई क्षेत्र से रूसी एयरलाइनों को उड़ान भरने से रोकना।

- **रूस के साथ हथियारों का व्यापार:** रूस भारत का प्रमुख हथियार आपूर्तिकर्ता बना हुआ है। हालांकि, युद्ध ने एक बार फिर अमेरिका द्वारा काउंटरिंग अमेरिकाज एडवर्सरीज थ्रू सेंशंस एक्ट (CAATSA) के उपयोग के जोखिम की संभावना को बढ़ा दिया है।
- स्टॉकहोम इंटरनेशनल पीस रिसर्च इंस्टीट्यूट (SIPRI) के आंकड़ों के अनुसार, रूस की **वर्ष 2017-21** के मध्य भारत के हथियारों के कुल आयात में **46%** की हिस्सेदारी रही है। ध्यातव्य है कि **वर्ष 2012-16 में यह योगदान 69% था।**

काउंटरिंग अमेरिकाज एडवर्सरीज थ्रू सेंशंस एक्ट (CAATSA), 2017

- यह ईरान, उत्तर कोरिया और रूस पर **प्रतिबंध आरोपित** करने के उद्देश्य से वर्ष 2017 में पारित एक **अमेरिकी संघीय कानून है।** संयुक्त राज्य अमेरिका के अनुसार, इसका उद्देश्य है:
  - ईरान की **अस्थिरता** उत्पन्न करने वाली गतिविधियों का निस्तारण करना,
  - यूरोप और यूरेशिया में **रूसी प्रभाव** को सीमित करना, और
  - **कोरिया पर आरोपित पाबंदियों** और प्रतिबंधों का आधुनिकीकरण करना।
- इस कानून के तहत, अमेरिका द्वारा रूस से **रक्षा उत्पादों का क्रय करने वाले** देशों पर कठोर प्रतिबंध लगाया जा सकता है। उदाहरण के लिए, इसने **तुर्की पर** रूस से **S-400 सतह से हवा में मार करने वाली मिसाइल रक्षा प्रणाली** को खरीदने के कारण प्रतिबंध आरोपित किए हैं।
- भारत को रूस के साथ 5 अरब अमेरिकी डॉलर के S-400 मिसाइल प्रणाली सौदे पर भी **प्रतिबंधों** का सामना करना पड़ा है।

2.1.2. वैश्विक भू-राजनीतिक परिवर्तन और भारत (Global Geopolitical Changes and India)

रूस-यूक्रेन युद्ध ने रूस के खिलाफ लंबे समय से चली आ रही पश्चिमी देशों की सनक को और अधिक बढ़ा दिया है। प्रतिरोधी रणनीति के उपयोग ने विभिन्न राष्ट्रों को दो **भू-राजनीतिक गुटों** में विभाजित कर दिया है। हालांकि युद्धकारी स्थितियों में बढ़ोतरी होने पर, यह प्रमुख शक्तियों के साथ भारत के संबंधों की परिवर्तित गतिशीलता के साथ-साथ दुनिया भर में महत्वपूर्ण भू-राजनीतिक परिवर्तन ला सकता है।

विभिन्न क्षेत्रों में संभावित परिवर्तन/खतरे

- **यूरोप:** तेल और अन्य वस्तुओं के लिए रूस पर अत्यधिक निर्भरता को कम करने हेतु **अफ्रीका और एशिया-प्रशांत** की ओर संबंधों के विस्तार को बढ़ावा मिल सकता है।
- **काकेशस और मध्य एशिया:** रूस-यूक्रेन का निकटतम पड़ोसी होने के नाते; यह युद्ध उनके लिए व्यापार कठिनाइयों में वृद्धि करेगा। उदाहरण के लिए, **पांच मध्य एशियाई देश भू आबद्ध देश हैं।** इसके अतिरिक्त काला सागर से काकेशस की समुद्री पहुंच के लिए स्वतंत्र रूप से तैरने वाली नौसैनिक सुरंगों की सूचना प्राप्त हुई है।
- **पश्चिमी गोलार्ध:** उच्च मुद्रास्फीति के दबाव के साथ, तेल की ऊंची कीमतें मध्य अमेरिकी और कैरेबियाई क्षेत्र में अस्थिरता उत्पन्न कर सकती हैं। हालांकि तेल, धातु और कृषि उत्पादों के निर्यातक देश जैसे कि ब्राजील, चिली आदि इस प्रभाव को कम कर सकते हैं।
- **उप-सहारा अफ्रीका:** यह क्षेत्र महामारी के कारण पहले से ही **मिनिमम पॉलिसी स्पेस** के कठिन दौर से गुजर रहा है, साथ ही इसकी गेहूं के लिए रूस या यूक्रेन पर अत्यधिक निर्भरता इसके सामाजिक-आर्थिक दबाव को और बढ़ा देगी।
- **मध्य पूर्व और उत्तरी अफ्रीका:** खाद्य पदार्थों की बढ़ती कीमतें खाद्य असुरक्षा की स्थिति को उत्पन्न करेंगी और साथ ही यहां खाद्य असुरक्षा की स्थिति के साथ **अरब स्प्रिंग** के समान **राजनीतिक अस्थिरता** का भी जोखिम उत्पन्न हो सकता है। उदाहरण के लिए, मिस्र अपने 80% गेहूं का आयात यूक्रेन से करता है।
- **हिंद-प्रशांत:** बढ़ती **चीनी आक्रामकता** (जैसे कि ताइवान में) इस क्षेत्र को बलपूर्वक यथास्थिति में एकतरफा परिवर्तन के प्रति संवेदनशील बनाती है।

भारत का वर्तमान दृष्टिकोण और प्रमुख शक्तियों के साथ इसके भू-राजनीतिक समीकरण

- **भारत का दृष्टिकोण:**
  - भारत ने अपने नीतिगत प्रसार को प्रभावी बनाने के लिए **रणनीतिक स्वायत्तता** के दृष्टिकोण को अपनाया है। उदाहरण के लिए-
    - **गुटीय राजनीति पर राष्ट्रीय हित को प्राथमिकता** देने से भारत को रूस से रियायती दर पर तेल, उर्वरक और अन्य वस्तुएं प्राप्त करने में मदद मिली है।
    - **राजनयिक सक्रियता** ने भारत को मिशन मोड **(ऑपरेशन गंगा)** में 18 देशों से 22,500 से अधिक भारतीयों और विदेशी नागरिकों को निकालने में सहायता प्रदान की है।